जुलाई २०२०-जनवरी २०२१
(संयुक्तांक)

ISSN : 2229-5585

यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी सूची में सम्मिलित
सावधिक शोध-पत्रिका

नमन Naman

सम्पादक

प्रो. श्रद्धा सिंह • डॉ. हिमांशु शेखर सिंह

वर्ष : १४

अंक : २३-२४

Scanned with CamScanner

नमनं वासुदेवाय नमनं ज्ञानराशये।
नमनं प्रीतिकीर्तिभ्यां नमनं सर्वभूतये।।

नमन

Naman

प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास द्वारा प्रकाशित
यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी (Multidisciplinary)
सूची में सम्मिलित सान्दर्भिक अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका
ISSN : 2229-5585

सम्पादक

डॉ. श्रद्धा सिंह
प्रोफेसर- हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

डॉ. हिमांशु शेखर सिंह
सह आचार्य- हिन्दी विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय
प्रयागराज

Scanned with CamScanner

१. हृदय देवी का उपन्यास 'मूक भाग प्रकाश' ९९
डॉ. श्याम शंकर पाण्डेय
२. नागार्जुन के उपन्यास और ग्राम-जीवन १०१
आराधना देवी
३. फणीश्वरनाथ 'रेणु' के आँचलिक उपन्यासों में लोकसंस्कृति का परिदृश्य ११२
अरुण कुमार यादव
४. अमरकांत की कहानियों में नारी-जीवन का चित्रण ११५
किरन चौरसिया
५. कमलेश्वर की कहानियों में नारी-पुरुष-सम्बन्ध ११८
डॉ० प्रदीप कुमार मौर्य
६. गिरिराज किशोर का औपन्यासिक वैशिष्ट्य 'पहला गिरमिटिया' के विशेष सन्दर्भ सहित १२३
डॉ. महेश चन्द्र तिवारी
७. 'कब तक पुकारूँ' : खानाबदोश जिन्दगी का जीवन्त दस्तावेज १३१
डॉ. राजीव कुमार वर्मा
८. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में यौन-विमर्श १३६
डॉ. शबाना हबीब
९. असगर वज़ाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त किसान-विमर्श १३९
माया देवी
१०. उदय प्रकाश के कथा साहित्य में राजनीतिक परिदृश्य १४५
मिथिलेश कुमार यादव
११. मन्नू भण्डारी की कहानियों की भाषा : अंत: एवं बाह्य अनुभूतियों की अभिव्यक्ति १५१
अनिल कुमार यादव
१२. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में नवजीवन-मूल्य १५६
पूनम चौरसिया
१३. समकालीन महिला कथा-लेखन : नयी राह-नया अंदाज १६०
श्रद्धा सिंह
१४. स्त्री पैदा नहीं होती, बना दी जाती है १७१
कृष्ण राज सिंह

खण्ड-ग

१. आतंकवाद और रचनाकार का दायित्व १७७
डॉ. मंजुनाथ एन. अंबिग
२. डिजिटल पुस्तकालय : संगृहीत सूचनाओं का केन्द्र १८५
डॉ. आलोक कुमार त्रिपाठी
३. गुरुकुल : एक अद्वितीय विद्यालयी प्रणाली १८९
धर्मेन्द्र कुमार तथा डॉ० सरिता शर्मा

Scanned with CamScanner

'पहला गिरमिटिया' के विशेष सन्दर्भ सहित

डॉ. महेश चन्द्र तिवारी *

हिन्दी उपन्यासों का सिलसिला पुराना है। जैसा कि डॉ. गणपति चंद्र गुप्त उपन्यास को परिभाषित करते हुए कहते हैं- "उपन्यास गद्य का नव विकसित रूप है, जिसमें कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद आदि तत्वों के माध्यम से यथार्थ और कल्पना-मिश्रित कहानी आकर्षक शैली में प्रस्तुत की जाती है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि वर्तमान में जो स्वरूप हिन्दी उपन्यास का है, वह वस्तुतः यूरोपीय प्रभाव लिए हुए है।"

स्वनामधन्य आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक काल को 'गद्य काल' कहा तथा इस गद्य काल के प्रथम उत्थान के तहत श्रीनिवास दास के उपन्यास 'परीक्षा गुरु' को हिन्दी का पहला उपन्यास बताया- "अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले पहल लाला श्रीनिवास दास का परीक्षा गुरु ही निकला।" लेकिन यह भी सच है कि उस समय की सभी औपन्यासिक कृतियाँ अंग्रेजी ढंग की नहीं हो पाई थीं। जैसे- ठाकुर जगन्मोहन सिंह का 'श्यामा स्वप्न' हो, बालकृष्ण भट्ट का 'सौ अजान एक सुजान' हो या देवकीनंदन खत्री का सुप्रसिद्ध तिलस्मी उपन्यास 'चंद्रकांता'। इन सभी कृतियों को देखने पर यह अवश्य साफ हो जाता है कि उस समय उपन्यास-कला के विकास पर जोर ना होकर इस बात पर अधिक बल था कि लेखक अपनी बात पाठक तक पहुँचा सके। साथ ही; यह भी सत्य है कि यूरोपीय प्रभाव हिन्दी में होने के बावजूद हमारे यहाँ यह विधा किसी न किसी रूप में विद्यमान रही ही। जैसा गणपति चंद्र गुप्त कहते हैं- "उपन्यास का उद्भव यूरोप में रोमांटिक कथा-साहित्य से हुआ, जो भारतीय प्रेमाख्यानों से प्रेरित था। रोमांटिक का अर्थ है- जिसमें प्रेम और साहस का निरूपण हो। संस्कृत के 'वासवदत्ता', 'कादंबरी' और 'दशकुमार चरित' में प्रेम, साहस और शौर्य का ही चित्रण किया गया। इस युग के भारतीय कथा-साहित्य में इन तत्वों की इतनी प्रधानता थी कि आचार्य रुद्रट ने कथा-साहित्य के लक्षण निर्धारित करते समय प्रेम और साहस को इसका आवश्यक लक्षण माना।"

कहने का तात्पर्य यह है कि भारत में हिन्दी का उपन्यास-साहित्य यूरोपीय उपन्यास- साहित्य का ही परम्परा-प्रेषण ना होकर, वस्तुतः मूल रूप में कथा कहने की भारतीय आदतों का हिस्सा है। आज हिन्दी का विद्यार्थी यह भली-भाँति जानता है कि भारतीय उपन्यास को तिलिस्म-ऐय्यारी के कल्पना-लोक से उतारकर समाज की वास्तविक जमीन पर लाने का श्रेय यदि किसी एक शख्स को है, तो वह है- उपन्यास-सम्राट प्रेमचंद। प्रेमचंद नामक पावन गंगा के बहाव में अब तक चली आ रही काल्पनिकता और आधारहीनता बह चली। हिन्दी उपन्यास अपनी ठोस आधार-भूमि पर न केवल अंकुरित हुआ, बल्कि इतने परिपूर्ण रूप से पल्लवित, पुष्पित और फलित भी हुआ कि परवर्ती साहित्य को भी पूर्ण रूप से प्रभावित और परिवर्तित करने में समर्थ हुआ। वस्तुतः प्रेमचंद के उपन्यासों द्वारा हिन्दी उपन्यास-विधा ने ऐसा बहुआयामी शिखर छुआ कि यह युग स्वयं में एक मानक बन गया। अब परवर्ती उपन्यासों के लिए इस शिखर को छूना भी एक चुनौती हो

* असिस्टेण्ट प्रोफेसर- सुभाषचन्द्र बोरा राजकीय महाविद्यालय, कपासन, (ओंकार श्री, महर्षि दयानंद स्कूल के पास) फतहनगर, जिला उदयपुर (राज.)

Scanned with CamScanner